श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

मास्टर ऑफ जैनिज्म् व्दितीय वर्ष-१

जून 2025

प्रश्न - पत्र

गुणांक ५०

वना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं ायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है। ५. गलत एनरोलमेन्ट नंबर तथा नहीं समझे ऐसे एनरोलमेन्ट नंबर १० अंक कम कर लिये जायेंगे। ६. समय पर ता. २५ अक्टोबर तक पेपर नही मिले तो दूसरे १० अंक कम किये जायेंगे। ७. निबंध के मार्क्स ग्रेड पद्धति से दिये ायेंगे। ८. जवाब पत्र, निबंध में नाम, एनरोलमेन्ट नंबर, वर्ष और सत्र लिखना जरुरी है। ९. जवाब तत्वार्थ सूत्र की अभ्यास पुस्तक के अध्याय ६ से ७ मेंसे लिखे येंगे।(पृष्ठ संख्या १४८ से १९१)

ाश्न नं. १ योग्य विकल्प ढूंढकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो २५

१. जगत के स्वभाव और शरीर का चिन्तन.................. के लिये करना चाहिये।
२. व्रती बनने के लिये..................का त्याग आवश्यक माना गया है।
३. मैत्री का विषय.................. है।
४. इच्छा पूर्वक प्रवृति करना.................... है।
५. सामान्य रुप से .... ही सब कर्म प्रकृतियों के बन्ध हेतु हैं।
६. संसारी जीव शुभ या अशुभ प्रवृति करते समय.................. अवस्थाओं में से किसी न किसी अवस्था में अवश्य रहते हैं।
७. संतोष .... का मूल है।
८. किसी तरह का दुर्ध्यान न हो उसी स्थिति में................ व्रत विधेय माना गया है।
९. तीन प्रकार को योग समान होने पर भी कषाय न हो तो उपार्जित कर्म में.................. का बंध नहीं होता।
१०. दूसरे के किये गये पापकार्य को प्रकट करना.................... है।
११. बिना विवेक के देह दमन की क्रियाएँ करना.................... है।
१२. देश काल आदि की परिस्थिति तथा मानव बुद्धि की संस्कारित के अनुसार.................. बनता है।
१३. इर्यापथ कर्म की स्थिति.................... मानी गई है।
१४. पराधीनता के कारण या अनुसरण के लिये अहितकर प्रवृति का त्याग करना .... है।
१५. त्याग के प्रथम स्तम्भ होने से भूलभूत गुण.................... कहलाते है।
१६. व्रत-नियम आदि योग्य अंकुश में अरुचि रखना............ कर्म के बन्ध के कारण हैं।
१७. प्राणियों को दुःख पहुंचे ऐसी कषाय पूर्वक प्रवृति................... है।
१८. .... के शुभत्व अशुभत्व का आधार भावना की शुभाशुभता पर है।
१९. निसर्ग यह.................... का मुख्य एक भेद है।
२०. जीवन का अंत निश्चित रुप से समीप दिखाई दे उस समय किसी तरह का दुर्ध्यान न हो तब..............व्रत विधेय माना गया है।
२१. रागद्वेष आदि विकारों का अभाव साधकर समभाव का परिशीलन करना............. है।
२२. जो सत्य होने पर भी दूसरे को पीडा पहूँचाता हो ऐसा................... कथन असत है।
२३. हिंसाविरति आदि व्रतों का अल्पांश में धारण करना.................... है।
२४. भावनाओ के अनुसार व्रतों का ठीक ठीक पालन किया जाये तो .... के समान सुन्दर परिणामकारक सिद्ध होते हैं।
२५. वस्तु के स्वामी की आज्ञा के बिना वस्तु को चौर्य बुद्धि से ग्रहण करना.................... है।

ान नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो २५

१. जिसके पालन और अनुसरण से सद्गुणों की वृद्धि हो वह क्या है ?
२. पहले से दसवें गुणस्थानक तक के सभी जीव न्यूनाधिक प्रमाण में कैसे होते हैं ?
३. अपने विद्यमान गुणों को छिपाना क्या है ?
४. शरीर आदि द्वारा आने जाने में कषाययुक्त प्रवृति क्या कहलाती है ?
५ किसका यथार्थ दर्शन होने से ही त्याग टिकता है ?

६. किसकी विशेषता में देय वस्तु के गुणों का समावेश होता है ?
७. छुरी आदि निर्जिव वस्तु की तीव्रता रुप शक्ति आदि क्या हैं ?
८. देय वस्तु को सचेतन वस्तु से ढँक देना कौनसे व्रत का अतिचार है ?
९. अनगार किससे मुक्त हैं ?
१०. जगत स्वभाव एवं शरीर स्वभाव के चिंतन से किसका बीज वपन होता है ?
११. जाग्रत और कुशाग्र बुद्धि का झुकाव किसकी ओर होगा ?
१२. अहिंसाव्रत में से निष्पन्न होने वाले अनेक व्रतों में से एक कौनसा व्रत है ?
१३. किन विषयों की अभिलाषा करना कांक्षातिचार है ?
१४. व्यवहार दृष्टि से मानवीय व्यवस्था के सामंजस्य का आधार क्या है ?
१५. इर्यापथिकी क्रिया किसके आश्रव का कारण नही है ?
१६. तत्यनुकम्पा यह कौनसे कर्म के बंध हेतु हैं ?
१७. दूसरों के उत्कृर्ष से प्रसन्न होना क्या है ?
१८. बिना इच्छा के कृत्य का हो जाना क्या हैं ?
१९. किस विषय में दूसरों को ठगना माया क्रिया है ?
२०. पशुपक्षी की भांति किस समाज के मनुष्य बिना आवश्यकता दूसरे जीवों के प्राण लेते हैं ?
२१. जैन उपासना का ध्येय उसके तत्वज्ञान के अनुसार क्या है ?
२२. असमीक्ष्य अधिकरण कौन से व्रत का अतिचार है ?
२३. किस पर निष्काम स्नेह रखना प्रवचन वात्सल्य कहलाता है ?
२४. कामोद्दीपक रसयुक्त खानपान का त्याग करना क्या है ?
२५. ज्ञान प्रदोष आदि आश्रवों को सेवन के समय किसके अनुभाग का बंध मुख्य रुप से होता है ?

प्रश्न नं. ३ विविध ग्रंथो की सहायता से तुम्हारे शब्दों में १५ से १६ पन्नो का महानिबंध लिखो (कोई भी एक)

१. **आश्रव यही संसार** (आश्रव का स्वरुप, द्रव्यभाव आश्रव, सांपरायिक और इर्यापथ आश्रव, अधिकरण, आठ कर्म के आश्रव)
२. **देश-विरती की दिशा** (मुक्ति के दो ही मार्ग - १) श्रावक बनो २) साधु बनो, श्रावक के बरह व्रतों का स्वरुप, अतिचार, शल्य संलेखना, सम्यग् दर्शन)
३. **आनंदघनजी महाराज का कोई भी एक स्तवन** (योगीराज आनंदघनजी का जीवन, साहित्य, भक्ति योग चोविसी में से एक सत्वन, गाथा, गाथार्थ और विशेषार्थ)

एम.जे. पार्ट -१ केन्द्रिय परिक्षा पत्र कैसा होगा ?

प्रश्न -१	रिक्त स्थान भरो	गुणांक - २०
प्रश्न -२	एक शब्द मे जवाब लिखो	गुणांक - २०
प्रश्न -३	नीचे के वाक्य सही या गलत बताईये	गुणांक - २०
प्रश्न -४	जोडियाँ लगाओ	गुणांक - २०
प्रश्न -५	एक वाक्य में व्याख्या लिखो	गुणांक - २०
	कुल	गुणांक - १००

निबंध के लिये नीचे मुजब ग्रेडिंग रहेगी

१) ४० मार्क्स के उपर A+ २) ३५ मार्क्स के उपर A ३) ३० मार्क्स के उपर B+ ४) २५ मार्क्स के उपर B
५) २० मार्क्स से कम C

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
सौ. कश्मीरा विनोद लोडाया, शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद.
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com